श्रीहित रूपवाणी माला का सप्तम पुष्प

श्री राधावल्लभो जयति । श्रीहित हरिवंशचन्द्रो जयति ।।

श्रीदास पत्रिका

अर्थात्

श्रीप्रिया प्रियतम के सम्मुख प्रेम द्वारा प्रेषित
पत्रिका

ब्रज भाषा साहित्य सम्राट्

चाचा श्रीहित वृन्दावनदासजी

कृत

www.RadhaVallabhMandir.com

www.RadhaVallabhMandir.com

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी

वृन्दावन

।।श्रीराधा।।
।।श्रीहित राधावल्लभो जयति।।
।।श्रीहित हरिवंशचन्द्रो विजयते।।

अथ श्रीदास पत्रिका लिख्यते।

चौपाई

श्री हितरूप अनूप वन्दि , गुरू चरननि उर धरि ।
ललित दास पत्रिका वरनि हित चित विचार करि ।।१।।

श्री हरिवंश प्रशंस सुमति दायक जु सहायक ।
प्रथम तिनहिं आराधि महत गुन जुत सब लायक ।।२।।

सिद्धि श्री विराजमान सर्वोपर सब गुन आलय ।
मैं श्रीगुरु मुख सुनी प्रीति दीनन सों पालय ।।३।।

श्रीनिवास शोभा निवास पुनि सुख निवास अति ।
महिमा महत निवास अखिल ब्रह्मांडनि गति पति ।।४।।

सकल धर्म कौ मूल निपट अनुकूल प्रणत जन ।
तातें अधिक उमाह रहत है नाथ मिलन मन ।।५।।

परम चतुर कौतुकी पीर पर मन की जानौं ।
तुम्हैं भजै जो कहूँ ताहि नीकैं पहिचानौं ।।६।।

सीलवंत गुनवंत सदा जनपन कौं लरजत ।
एक रावरी बांह भक्त विभुवन में गरजत ।।७।।

महा तेज बलवीर धीर-धार को सम वीयौ ।
परम सनेहिनु हेत कहा नहिं साकौ कीयौ ।।८।।

अहा कहों मणि जानि जगत जीवन जग भूषन ।
हौ समरथ सब भाँति चरितै कीने निरदूषन ।।९।।

हौ करुणा की अवधि अवधि आनंद सु वरषन ।
अपने कौ उत्कर्ष बढ़ावन अति उर हरषन ।।१०।।

www.RadhaVallabhMandir.com

राधापति राधा सुख्य वर्द्धन राधा सहचर ।
राधा विपुल सुहाग रंग रस नेह निपुन तर ।।११।।

राधा रूचि अनुकूल वदन अम्बुज के मधुकर ।
राधा परवस नेह विदित राधा मुरलीधर ।।१२।।

राधा रूप अहार भोगता वन घान सम्पति ।
अहो अहो राधाकंत वहत रस गहर तहाँ अति ।।१३।।

दुर्ल्लभ यह रस अहा विपुल परताप अखंडित ।
वरषत कानन कुंज तीर रविजा जहाँ मंडिता ।।१४।।

मो वृन्दावन दास नाम गुरु संत धरायौ ।
ताकी तुमकों लाज पत्रिका लिखि जु पठायौ ।।१५।।

कोटि कोटि दंडवत निवेदन प्रभु कों मेरी ।
करूणा करि लीजियै दीजियै मोहि न डेरी ।।१६।।

तुमहौ कुशल स्वरूप सदा मंगल जिहिं ठांहै ।
यहाँ कुशल तव होय कृपा रावरी जु चाहैं ।।१७।।

समाचार अब लिख्यौं आप नीकैं सु जानियौं ।
करूणामय जो नाम सत्य पुनि सत्य मानियौं ।।१८।।

दूरि परचौ आपुतें बहुरि उलटौ पथ लीयौ ।
वरजत वेद पुराण संत गुरु कह्यौ न कीयौ ।।१९।।

बहक्यौ वन संसार पार अजहूं नहिं पाऊं ।
जानत भयौ अजान विपति अब काहि सुनाऊं ।।२०।।

स्वामी समरथ सों विनती वुद्धि मेरी अब फेरौ ।
देख्यात अन्धौं भयौ कृत्य मेरे तन हेरौ ।।२१।।

तुमतें बिछुरचौ जबहिं महा दुख पायौ हो हरि ।
माया ठगिनी ठग्यौ बहुत परपंचनि करि करि ।।२२।।

तुम समरथ, हौं दीन वीनती यह मन धरियै ।
भ्रम्यौ जगत वन बहुत दया रंचक इत करियै ।।२३।।

www.RadhaVallabhMandir.com

मन अनीति अति करी बांधि इन्द्रिन पुनि लीयौ ।
बिसरचौ तुम्हरौ कृत्य विषय मुहि अन्धौ कीयौ ।।२४।।

स्वामी बिनु सुधि लेहि कौन या महा पंग की ।
डारि आँधरे कूप करी गति अति कुसंग की ।।२५।।

जनम जनम बहु नच्यौ तच्यौ खोटी करि करनी ।
तुम दिशि दीनी पीठ, दीठ दीनी घर घरनी ।।२६।।

ताही के रँग रच्यौ सच्यौ शुभ अशुभ जु कर्मनि ।
ऊँच नीच फल लग्यौ भोगवत लोकन भर्मनि ।।२७।।

कर्मनि मानत ईश बहुत रूचि तिन में बाढ़ी ।
कादौं चहलै फँस्यौ मोह फाँसी गल गाड़ी ।।२८।।

यह गति मेरी जानि मानियौं हरि निश्चय करि ।
औरौ विपति अनेक भरी बहु देही धरि धरि ।।२९।।

तुम्है कहा प्रभु दोस समुझ मेरी ही भौंड़ी ।
अब सुनि गई न करहु दास लज्जा गहि औड़ी ।।३०।।

तुम स्वामी हौ दास आदि ही तै चलि आयौ ।
भूले कौं छिमि देहु समुझ अब बहुरि कहायौ ।।३१।।

(अरिल्ल) --प्रेम पथिक के हाथ पत्रिका है दई ।
पहुँचैगी तुम पास अहो करुणा मई ।।
बांचि सांचि अब वेगि आइ सुधि लीजियै ।
हरि हां वृन्दावन हित रूप विलँब नहिं कीजियै ।।३२।।

अरु कहियो मुख्य वचन पथिक यों जायकैं ।
वंदौं तेरे चरन अधिक सिर नाय कैं ।।
बार बार मो विनती श्रवण सुनाइयो ।
हरि हां उनके मन करुणा अतिशय उपजाइयो ।।३३।।

रविजा तट कमनीय वृन्दावन धाम है ।
राधा रस बस रहत रसिकमणि नाम है ।।
हित रूपा ललितादिक जिनके संग में ।
हरि हां तिनहिं पत्रिका तीजो हरषि उमंग में ।।३४।।

www.RadhaVallabhMandir.com

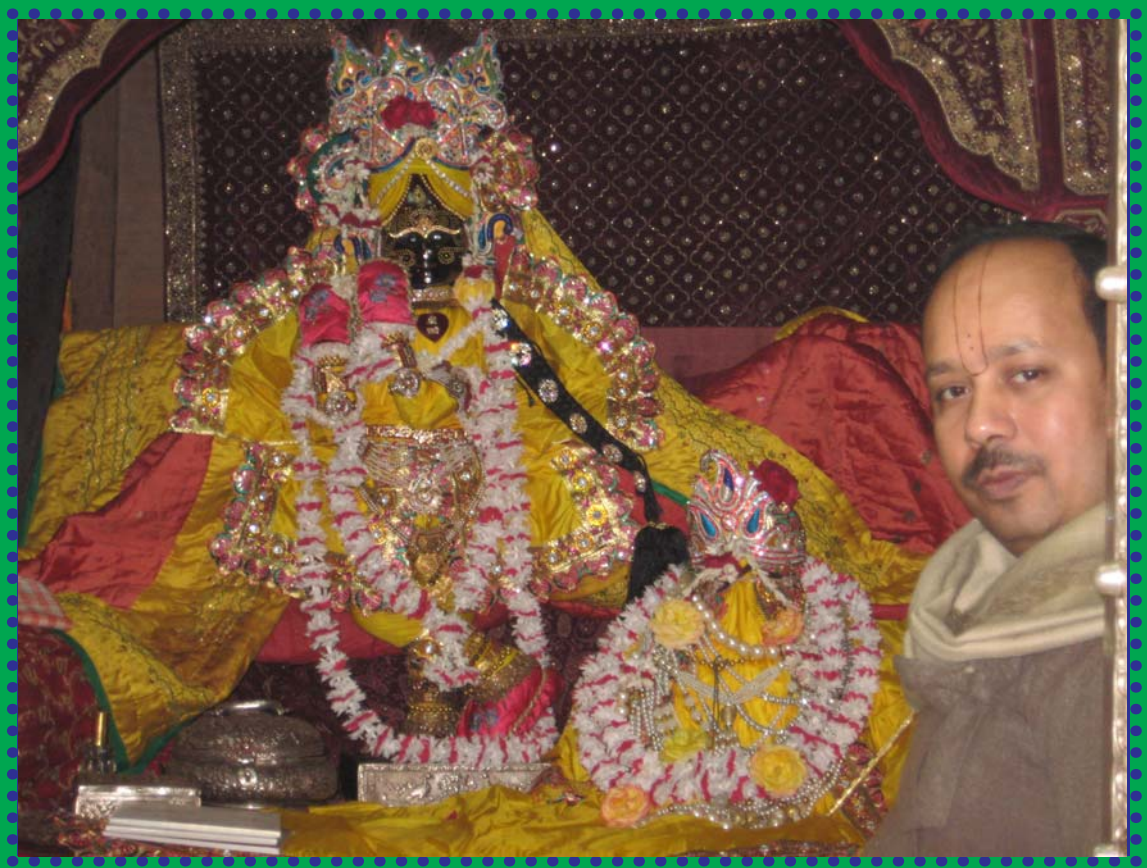

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी
वृन्दावन

अहो प्रेम तू परम पूज्य ह्यां ह्वां महा ।
तेरी प्रभुता विदित लिख्यौं पाती कहा ।।
वे तोहिं जैहें जानि मानि हैं हेत अति ।
हरि हां जो देखी मम दसा वरनियो सो जु गति ।।३५।।

जोरौं तोसों हाथ काज करि आइयै ।
नमो नमो पुनि नमो सँदसौ लाइयै ।।
मैं को सुकृत कियौ पथिक तोसौ मिल्यौ ।
हरि हां जासों कहत सँदसौ मो उर सुख झिल्यौ ।।३६।।

तू समझत अब मनकी यह मोहित अति रली ।
अब कै उनकी बात कछू लावै भली ।।
हँसि हैं राधालाल तोहि दृग देखिकै ।
हरि हां इतने ही हौं मानो भाग्य विशेष कैं ।।३७।।

जो बूझैं कछु क्रिया माहिली प्रीति कौ ।
ता तुम निधरक कहियो मेरी रीति कौं ।।
निश्चय औगुन ख्यानि जानियौं एक है ।
हरि हां ऐ पै तुम्हरे नाम गही दृढ़ टेक है ।।३८।।

रीझ ख्रीझ की बात बूझि हौं आप ही ।
किहि विधि बढ़ै तुम्हारौ जस परताप ही ।।
औगुन गहौ कि नाम आपनी लाज कौं ।
हरि हां उत्तर देहैं समझि लीजियो काज कौं ।।३९।।

तुम मेरे बड़ देव प्रेम आराधि हौं ।
अरु सब क्रिया विहाय कृपा तुम साधि हौं ।।
कुवन बनी हूँ सुवन तुरत तुमतें बनै ।
हरि हाँ गुरु प्रसाद मोहिं मिले मिनोरथ वरषनै ।।४०।।

तुमसे परस दयाल दीन सों हित करौ ।
सूखे सरवर हिये तोय सुख्ख सौं भरौ ।।
परम अनाथ सनाथ होत तुम परसिकैं ।
हरि हाँ हरिहूँ अजित परत हैं तुम दत रहसि कैं ।।४१।।

वहाँ यहाँ की ख्बर कृपानिधि राखि हौ ।
मेरे हित की पुनि पुनि उनसों भाखि हौ ।।

www.RadhaVallabhMandir.com

वे विहार उन्मत्त वसत हैं कूँज घान ।
हरिहाँ उहि वन तुम्हारौ राज बहुरि बसौ जुगल मन ।।४२।।

कहाँ लगि करहुँ प्रशंस दरस तुम पाय कैं ।
महिमा अपने भाग कहौं कहा गाय कैं ।।
हौं चाहत जिहि दास्य सेव्य तुम उहिं सुघार ।
हेरि हाँ बिसे बीस यह बात बनी मन डारि डर ।।४३।।

गुरु दीनों यह भेद रीति अभिराम सों ।।
मोहि बढ्यो विश्वास तुम्हारे नाम सों ।।
श्री वृन्दावन नाथ खिलावत तुम सदा
हरि हाँ पायौ लाभ अलभ्य मैं जु तुम संपदा ।।४४।।

जो वे कहैं कि खोटे वाके कर्म हैं ।
तौ सब देहु मिटाय तुम्हारौ धर्म हैं ।।
खोटौ सौनों स्वर्णकार पावक धरै ।
हरि हाँ वार वार पुनि ताइ ताहि कुन्दन करै ।।४५।।

देह धर्म सब देखौ पापनि खानि है ।
हौ परबस परयौ नाथ विसारि पहिचानि है ।।
स्वामी समरथ लीजै आप छुड़ाय कै ।
हरि हाँ माया नटी सीस नाचत वहु भाय कैं ।।४६।।

बालक की अज्ञता न जननी मन धरै ।
अग्नि कूप जल परत दौरि रक्षा करै ।।
तुम समरथ दृग देखौ हटकि न कर गहौ ।
हंरि हाँ एते हू पै दोस कहा जिय कौ कहौ ।।४७।।

जो कहैं वालक अज्ञ याहि सब ज्ञान है ।
तुम बिनु समझनि सबै नर्क की खान है ।।
समझ्यौ अमृत छांडि न विष कौं पीवही ।
हरि हाँ दुख चौरासी जोनि सु मरि मरि जीव ही ।।४८।।

अलप समझ अस जानि नाथ करुणा ढरौ ।
अंश आपनौ जानि शंस जिय की हरौ ।।
चरन छत्र की छाया या पै कीजियै ।
हरि हाँ तकी धनी की ओट शरन अब लीजियै ।।४९।।

www.RadhaVallabhMandir.com

सुनि सुनि ऐसे वचन गई नहिं करेंगे ।
विरद आपनें की मन लज्जा धरेंगे ।।
करतल पटकि पटकि हँसि हैं दोऊ अति लड़े ।
हरि हाँ मेरी बिगरी बात सँवारन वे बड़े ।।७०।।

मैं निश्चय जिय करी ताहि नहिं टारि हौं ।
नाम रूप गुन माला उर दृढ़ धारि हौं ।।
वे कहियत बस प्रेम सु तुम मो पास ही ।
हरि हाँ तुम दत मिलि हौं वेगि बढ़ी डर आस ही ।।७१।।

।। सोरठा।।

जब तब जिय अकुलाय, चाह सतावे रैन दिन ।
ए पै कछु न वसाय, जैसे पक्षी पख्र बिन ।।७२।।

राख्यौं मन समुझाय, घरी घरी में तर फरै ।
तऊ अगमनौं जाय, मिलन काज कौतुक करै ।।७३।।

अरु इक मन सन्देहु, ज्ञानवन्त नियरें कहत ।
मोहि बताय किन देहु, किहि कारण वे दुरि रहत ।।७४।।

दूर वतावत एक, एक बतावत निकट ही ।
या कौ करौ विवेक, दहुं विधि लागत बिकट ही ।।७५।।

तुम हौ प्रेम प्रवीन, सत्य वचन अब बोलियै ।
मोहि जानि अति दीन, मरम बात कौं खोलियै ।।७६।।

(प्रेम का उत्तर)

।।दोहा।।

नाम रूप सुमिरै सदा, श्रद्धा जा उर भूर ।
ऐसे जने नीयरे, ज्ञान दुग्ध तें दूर ।।७७।।
मैं जा उर बासौ कियौ, पुनि प्रभु रूप चिन्हार ।
ताहि मिल्यौ ही जानिये, सत्य सुनहु निर्धार ।।७८।।

www.RadhaVallabhMandir.com

।।अरिल्ल।।

दई पत्रिका हाथ सँदेसौ मुख कह्यौ ।
श्री वृन्दावन नाथ पथिक तौ कर गह्यौ ।
अहो प्रेम मो चरित सहित तुम जासु हिय ।
हरि हां सत्य सत्य यह जानि लगै सो मोहि प्रिय ।।५९।।

मो गुन श्रवन कथन जा चित उमाह है ।
तिहि देखन की मो मन बाढ़त चाह है ।।
वेगि देहु यह खबर नाम के लार हौं ।
हरि हां पाछें फिरौं कहत निरधार हौं ।।६०।।

जो मेरी दृढ़ भक्ति करन अनुसरचौ मग ।
वह चलि है पग एक चलौं हौं बीस पग ।।
भक्त भुवन पावन जो रति मो पद करै ।
हरि हाँ मेरे लीला चरित सिंधु सुख कौं तरै ।।६१।।

आय सँदेसौ कह्यौ दास हिय सुख सन्यौं ।
प्रभु की कृपा अनन्त दोष अपनों गन्यौं ।।
हरि सौ प्रीतम छांड्यौ धृक धृक निलज मन ।
हरि हाँ वृन्दावन हित रूप भरन अभिलाष जन ।।६२।।

सुनि अति मंगल भयौ परम आनंदि कैं ।
प्रेम हिये सौं लाय लाय पद वंदि कैं ।।
वे चाहत सब भाँति दया कौ मूल हरि ।
हरि हाँ वृन्दावन हित रूप प्रीति प्रभु चरन करि ।।६३।।

ठारहसौ पर बीस वर्ष नाग्यौ जबै ।
लिखी पत्रिका दास समझियौ यह तबै ।।
जेठ वदी हरिवासर पूरन है भई ।
हरि हाँ वृन्दावन हित जुगल भजन जिय सुधि दई ।।६४।।
(जेठ बदी १८२० वि ० सोमवार)

।।कवित्त।।

सेवक है जीव ताके स्वामी सदा राधालाल ,
परि गई कुटेव कछू प्रभु सों दई डेरी सी ।

www.RadhaVallabhMandir.com

प्रेम भक्ति बिना धरि नाना जौनि भ्रमत है ,
बिसरचौ धनी याकौ लगी काम चक्र फेरी सी ।।
गुरु मुख सत्संग में विवेक भयौ पाती सौ ,
हरि पद रति जानि कृपा दृष्टि नेरी सी ।
गीता भागौत वचन प्रभु कौ सँदेसौ यही ,
वृन्दावन हित कही ताकी यह पहेरी सी ।।६७।।

इति श्रीहित वृन्दावनदास जी कृत दास पत्रिका सम्पूर्णम्।

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी
वृन्दावन